International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 19-20

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 19-20
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-11-2016
Accepted: 08-12-2016

डॉ0 ईन्दर देव
V.P.O. Jharag Teh. Jubbal Distt. Shimla, Himachal Pradesh, India

Correspondence
डॉ0 ईन्दर देव
V.P.O. Jharag Teh. Jubbal Distt. Shimla, Himachal Pradesh, India

शृंगारषतक में शृंगारिक भावना

डॉ0 ईन्दर देव

प्रस्तावना

संस्कृत गीतिकाव्यधारा में भर्तृहरि का विषिष्ट स्थान है। इन्होंने नीति, शृंगार और वैराग्यषतकत्रय की रचना करके संस्कृत साहित्य को सुभाषितों की महत्त्वपूर्ण परम्परा प्रदान की हैं। नीतिमार्ग पर चलने के इच्छुक नीतिषतक में, कामिनीकटाक्ष से पीड़ित शृंगारप्रेमी शृंगारषतक में और संसार को निःसार समझने वाले मुमुक्षुजन वैराग्यषतक में अपनी–अपनी वृत्ति का पूर्ण परितोष पाते हैं। इस प्रकार सभी अवस्थाओं में मनुष्य को भर्तृहरि के षतकत्रय महान् प्रेरणा देने वाले हैं। शृंगारषतक के अंतिम पद्य में कवि ने स्वयं यह सन्देष दिया है–

''यद्यस्य नास्ति रूचिरं तस्मिंस्तस्याऽस्पृहा मनोज्ञेऽपि।
रमणीयेऽपि सुधांषो न मनः कामः सरोजिन्याः।।[1]''

यही कारण है कि ये षतकत्रय संस्कृत साहित्य एवं भारतीय समाज में उज्ज्वल मणि के समान समादृत हैं।[2]

भर्तृहरि का शृंगार यौवनोल्लास का उदगार है इसमें शृंगार का उद्दाम विलास चित्रित है। इसके प्रसंगों में काम की विभिन्न स्थितियाँ, युवक–युवतियों की विविध प्रणयक्रीड़ाएँ, स्त्रियों के हावभाव, कटाक्ष एवं शृंगारिक चेष्टाओं का हृदयस्पर्षी वर्णन है। शृंगारषतक में कवि ने नारी के हृदय की सच्ची परख की है। कवि ने ललित मधुर षैली में वर्णित किया है कि स्त्रियाँ अपने हाव–भाव, चंचल चितवन, यौवन की मादकता और अंगों की मोहकता से पुरूषों पर कैसा जादू डाल देती हैं–

''भ्रूचातुर्यात्कुंचिताक्षाः कटाक्षाः स्निग्धा वाचो लज्जिताष्चैव हासाः।
लीलामन्दं प्रस्थितं च स्थितं च स्त्रीणामेतद्भूषणं चायुधं च।।''[3]

शृंगारषतक में 100 पद्य हैं, जो कि विविध छन्दों में लिखे गए हैं। कामनी सदृष कोमल षैली को अपनाते हुए कवि ने इसमें स्त्रियों के आकर्षण के विषय में बताने का प्रयत्न किया है। कवि कामदेव के विषय में अपने भाव व्यक्त करता हुआ लिखता है–

''मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति षूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः।
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः।।''[4]

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के समक्ष ऐसे उदाहरण हैं कि बड़े से बड़े षूरवीर भी काम से विचलित होकर पथभ्रष्ट हो जाते हैं; परन्तु इसके साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के समान कामदेव को इन्होंने अजेय नहीं बताया और जहाँ इस प्रकार के व्यक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत रहा होगा जो काम भावना से दूषित हो गए हैं वहाँ दूसरी ओर कन्दर्पदर्पदलने समर्थ व्यक्तियों के उदाहरण भी उन्हें मिले होंगे इसलिए कवि 'विरला मनुष्याः' लिखते हैं। कामदेव की अजेयता तथा उतम व्यक्तियों के द्वारा उससे प्रभावित न होना भी कवि को यहां अभिप्रेत रहा होगा। शृंगारषतक होते हुए भी शृंगार से रूचि हटाना काव्य का प्रयोजन रहा होगा। इतना ही नहीं कवि की दृष्टि से कामदेव चोर है–

''कामिनीकायकान्तारे कुचपर्वत दुर्गमे
मा संचर मनः पान्थ तत्रास्ति स्मरतस्करः।।''[5]

वास्तव में चोर से बचाना बड़ा मुष्किल है जैसा कि उपर कहा गया है कि कवि की दृष्टि में कामदेव अजेय नहीं है; अपितु उसको वषीभूत किया जा सकता है। वह बहुत कमजोर है। कमजोर होते हुए भी वह कैसे दूसरों को वष में कर लेता है, उसके लिए कवि ने दो बातें समझा रखी हैं। एक उसका 'तस्कर' होना और दूसरा मन को चुराना। कामदेव चोर है जो मन को चुराता है। वह एकदम समक्ष नहीं आता; अपितु चोर के समान अवसर की तलाष में बैठा रहता है कि कब अवसर मिले और मैं चोरी करूं। अतः कवि मन को समझाता है कि चोर कामदेव न आत्मा को चुरा सकता है, न इन्द्रियों को; अपितु मन को चुरा लेता है अर्थात् वह मन का चोर है। मन का सम्बन्ध इन्द्रियों से है उसके चोरी होने पर इन्द्रियाँ उसके पीछे–पीछे स्वतः चली जाती हैं। कवि को ध्यान है कि 'मनः एव मनुष्याणां कारण बन्ध मोक्षयोः' कवि का भाव मन को वष में करने का है न कि उसको अजेय बताना। कवि के अनुसार विष्वामित्र, पराषर आदि ऋषि भी कामदेव को परास्त न कर सके–

''विष्वामित्रपराषरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाषना–
स्तेऽपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः।
षाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं भु०जन्ति ये मानवा–
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम्।।''[6]

एक अन्य पद्य में कवि रूपवती स्त्री को देखकर उस पर मोहित होने एवं उसकी दुर्लभता का वर्णन करते है –

''अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररूहै–
रनाविद्धं रत्नं नवमधुमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च भवद्रूपमनघं
न जानं भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यत इति।।[7]''

कुछ लोग यह कहते है कि श्रृंगारषतक एकमात्र श्रृंगार की भावनाओं से ओत–प्रोत है अतः श्रृंगारषतक, नीतिषतक और वैराग्यषतक एकदम विरोधपरक है। वे भूल जाते हैं कि कवि ने भले ही पहले स्त्रियों के आकर्षण की बातें लिखी हों; परन्तु षतक के अन्त में चलकर वे वैराग्यषतक के अतिषय समीप पहुँच जाते हैं या ऐसा कहिए कि वैराग्यषतक का कवि धीरे–धीरे संसार से ऊपर उठता है और श्रृंगारषतक से उठना प्रारम्भ करता है तथा वैराग्यषतक के अन्त में मानों पूर्णतया संसार से विरक्त होने पर उस परमपिता में लीन हो जाता है जिसको बड़े–बड़े योगी भी ध्यान लगाकर प्राप्त नहीं कर सकते। यदि श्रृंगारषतक में कवि एकमात्र स्त्रियों के आकर्षण की बात कहता या स्त्रियों के सौंदर्य का गान करना उसको अपेक्षित होता तो स्त्रियों को इतनी उपेक्षा की दृष्टि से वह कभी न देखता और न ही स्त्रियों के सौंदर्य पर मुग्ध होने वालों को त्रुटिपूर्ण कहता। कवि स्त्रियों पर मुग्ध होने वालों कि उपमा मूर्ख भ्रमर से देता हुआ लिखता हैं कि लीलावती स्त्रियों के जो विलास है, वे स्वाभाविक हैं। मूढ़ों के हृदयों में ये वषीकरण के समान लगते हैं, जैसे कमलिनी में लालिमा स्वाभाविक होती है; परन्तु भ्रमर उस पर व्यर्थ ही आसक्त होकर घूमता है, अर्थात् वह समझता है कि मेरे लिए ही यह लालिमा चमक रही है; परन्तु यह सब धोखा ही है।[8]

इस प्रकार देखने से स्पष्ट है कि श्रृंगारषतक का नाम श्रृंगारपरक होने पर भी प्रथम स्त्रियों के प्रति आकर्षण की बात कहकर अन्त में पाठक को वैराग्य की ओर ही उन्मुख किया है। पहले स्त्रियों को जितना ऊँचा उठाया है उतना ही षतक के अन्तिम पद्यों में नीचे गिराने का प्रयत्न कवि द्वारा किया गया हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार धीरे–धीरे विरक्ति की ओर बढ़ता हुआ कवि वैराग्यषतक से पूर्ण ज्ञान को या विरक्ति को प्राप्त हो गया होगा या पाठक को वैराग्य तक पहुँचाने के लिए प्रथम श्रृंगारिक कविताएँ कहकर उसे उस ओर आकृष्ट करके पुनः उसको वैराग्य की ओर उन्मुक्त करना चाहता है। कुछ भी हो श्रृंगारषतक कवि की उस विरक्ति की ओर संकेत करता है जिसका पूर्ण विकास वैराग्यषतक की भूमिका मात्र है।

संदर्भ ग्रर्थ

1. श्रृंगारषतक, 100
2. डॉ0 जयकिषनप्रसाद खण्डेलवाल, संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृ0, 147
3. श्रृंगारषतक, 3
4. वहीं, 58
5. वहीं, 85
6. वहीं, 65
7. वहीं, 96
8. वहीं, 78